35.0 वैदिक साहित्य में शिव का स्वरूप और उनकी उपासना

- **सन्ध्या**, शोधच्छात्रा, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
  ईमेल- sandhya78440bajpai@gmail.com

शोध-सार

भारतवर्ष विभिन्न धार्मिक परम्पराओं एवं आस्था की पृष्ठभूमि है। वेद इन परम्पराओं की ज्ञानगङ्गा एवं सुदृढ साक्ष्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वेदों में इन्द्र रुद्र आदि अनेकों देवताओं के स्वरूप प्राप्त ,विष्णु ,अग्नि ,होते हैं। कालान्तर में विष्णुसूर्य आदि देव ,रुद्र , रुद्र को जनसामान्य में श्रेष्ठ देवों के रूप में प्रचलित हुए। इनमें से सबसे अधिक ख्याति देव रुद्र देव को प्राप्त हुई। वैदिक साहित्य में उग्र, बलवान एवं कल्याणकारी देवता के रूप में चित्रित किया गया है जिसकी उपासना जङ्गलों एवं पर्वतों में रहने वाली जातियों द्वारा की जाती थी। रुद्र की उपासना वैदिक यज्ञों, मन्त्रपाठ तथा स्तुतियों से होती थी। रुद्र ही आगे चलकर शिव कहलाए तथा इनके भक्तों द्वारा अनुपालित धर्म शैवधर्म कहलाया। शिवस्वरूप द्वन्द्वात्मक है। यह विनाशक क-ी साथ ही सृष्टि के पालक एवं रक्षक भी हैं। वे रोगनाशक वैद्य के रूप में भी पूजे जाते हैं। उपनिषदों में रुद्र को परब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। शिव को ब्रह्माविष्णु - की एकात्मता के साथ महेश्वर भी कहा गया है। वैदिक काल में शिव को एक रुद्र तथा अनेक रुद्र दोनों रूपों में देखा गया, परन्तु वह एक ही परम तत्त्व ब्रह्मस्वरूप है। वैदिक साहित्य में शिव का स्वरूप प्राचीन भारतीय धर्म को दर्शाता है। यही आगे चलकर (रुद्र) तत्त्व का आधार बना। शिव की उपासना वैदिक युग से निरन्तर प्रवहित शैवधर्मदर्शनपरम्-पौराणिक शिवपरा की नींव है। यह वर्तमान में भी रुद्राभिषेक, शिवस्तोत्र तथा महामृत्युञ्जय आदि मत्रों के रूप में जीवित है। प्रस्तुत शोधपत्र में वैदिक साहित्य में प्राप्त - शिव के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन तथा शैवधर्म के कालक्रम की विस्तृत एवं साक्ष्यपरक चर्चा की जाएगी।

कुञ्जी शब्द -*शिव,दौर्वात्य ,केशी ,कपर्दिन् ,उपासना ,स्वरूप ,उपाधि ,उपनिषद् ,ब्राह्मणग्रन्थ ,वेद ,रुद्र , वृषभ, महाभिषक् , शैववाद आदि। ,दिवोवाराह ,विध्वंसक ,त्र्यम्बक्*

सर्वाननशिरोग्रीव॥:शिव :। सर्वव्यापी स भगवांस्तस्मात्सर्वगत:सर्वभूतगुहाशय :

प्राचीन काल से ही शैवमत हिन्दूधर्म का एक प्रमुख अङ्ग है। इसमें व्याप्त धार्मिक विभिन्नता और सम्मिलित रीतिरिवाज का - अध्ययन विस्मित कर देने वाला है। शैव दर्शन इसी धर्म का परिणाम है, जिसकी विशेषता भगवान शिव के भौतिक रूप की वरिवस्या है। डॉ कान्तिचन्द्र पाण्डेय के अनुसार .शैववाद के प्रमाण हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की पुरातात्त्विक खोजों के प्रागैतिहासिक काल से ही उपलब्ध हैं। इसका कम से कम पाँच हजार वर्षों का सतत इतिहास है। सिन्धु घाटी सभ्यता के खण्डहरों में प्राप्त शिवलिङ्ग, वर्तमान में भी शैववाद के अनुयायियों के बीच पूजनीय वस्तु है[1]। वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति और धार्मिकता का आधार है। इस साहित्य में भगवान शिव का स्वरूप और उनकी उपासना का स्थान महत्वपूर्ण है। वैदिक काल से शिवोपासना समग्र भारत में एक जीवित आस्था है। वैदिक साहित्य भारतीय धार्मिकता, संस्कृति और परम्परा का अभिन्न हिस्सा है। इसमें शिव का स्वरूप और उनकी उपासना की प्रक्रिया का अत्यधिक महत्त्व है। शिव के विभिन्न नाम, जैसे रुद्र और पशुपति आदि चारों वेदों में प्राप्त होते हैं।

वैदिक ग्रन्थों में शिव प्राकृतिक शक्तियों और आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं। फ्रांसीसी विद्वान् **ए. बार्थ** ने भगवान् शिव को सन्दर्भित करते हुये लिखा है कि शिव एक वैदिककालीन देवता थे, जिनकी उपासना अधिकतर जनसाधारण में होती थी, और जिनका भारत

[1] The phallic emblem of Śiva, as found in the ruins of the Indus valley civilizations, is even today an object of worship among the followers of Saivaism. K. C. Pandey, An Outline of History of Śaiva Philosophy, pp.01.

के उस विक्षुब्ध जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध था, जो अति प्राचीन काल से इस देश की एक विशेषता रहा है[2] । **नैचुरल रिलिजन्स ऑफ इण्डिया** पुस्तक के लेखक के अनुसार भगवान् शिव के दो मुख्य स्वरूप बतलाए गये हैंएक सौम्य और शुभ -, दूसरा भयावह और विध्वंसक। लायल आगे लिखते हैं कि प्रारम्भ में भगवान् शिव प्रकृति के सर्जनात्मक और संहारात्मक रूप (द्विविध) शक्तियों-के प्रतीक थे तथा भगवान शिव दो आदि का सम्मिलित विशुद्ध रूप हैं, जिसमें से एक जीवनदायिनी और दूसरी जीवनहारिणी है[3]।

पौराणिक शैवमत के विभिन्न रूपों के विकास का स्रोत वैदिक रुद्र की उपासना ही है[4]। वैदिक साहित्य में शिव का स्वरूप सङ्क्षिप्त रूप में रुद्र के रूप में प्रकट होता है, जबकि उनकी उपासना यज्ञों और मंत्रों के माध्यम से की जाती है। शिव का यह आध्यात्मिक स्वरूप आगे चलकर उपनिषदों और पुराणों में विस्तृत रूप से विकसित हुआ। शिव के प्रति भक्ति और श्रद्धा वैदिक संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण भाग रही है। वैदिककालीन शिवोपासना के महत्त्व को कतिपय मन्त्र प्रमाणित करते हैं। यथा-

(1) **इमा रुद्राय तपसे।**

(2) **इमा रुद्राय शतधनविने।**

(3) **त्र्यम्बकं यजामहे।**

ऋग्वेद में रुद्र का स्वरूप व उपासना-

ऋग्वेद में रुद्र मध्यम श्रेणी के देवता हैं। उनकी स्तुति में केवल तीन पूर्ण सूक्त कहे गये हैं[5]। अन्य सूक्तों में सोम तथा इन्द्रादि देवताओं सहित रुद्र का स्तवन किया गया है। रुद्र को मरुतों का पिता कहा गया है[6]। सूक्तों में रुद्र के प्राप्त विभिन्न स्वरूपोंउनके नाम का , शाब्दिक अर्थ, मरुतों के साथ साहचर्य तथा वर्णादि के वर्णन को देखते हुए कुछ विद्वानों ने यह धारणा बनाई कि रुद्र झंझावात के प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए जर्मन विद्वान **वेबर** ने रुद्र के नाम पर बल देते हुए यह अनुमान लगाया कि रुद्र झंझावात के **रव** का प्रतीक है। मैकडॉनल ने रुद्र और अग्नि के साम्य को पहचानते हुए यह विचार प्रकट किया कि रुद्र विशुद्ध झंझावात का नहीं, अपितु विनाशकारी विद्युत् के रूप में झंझावात के विध्वंशक स्वरूप के प्रतीक हैं[7]। **श्रीभण्डारकर** तथा अंग्रेज विद्वान **म्यूरह** ने भी रुद्र को प्रकृति को विनाशकारी शक्तियों का प्रतीकमात्र माना है-[8]। अँग्रेज विद्वान् **विल्सन** द्वारा अनूदित ऋग्वेद की भूमिका में रुद्र को अग्नि अथवा इन्द्र का ही एक रूप माना है। प्रोफेसर **कीथ** रुद्र के हितकारी रूप को नहीं मानते हैं।

रुद्र के घातक बाणों को आधार बनाकर कुछ विद्वानों ने उनको मृत्यु का देवता भी माना है और इसके समर्थन में उन्होंने ऋग्वेद का वह सूक्त प्रस्तुत किया है, जिसमें रुद्र का केशियों के साथ विषपान का उल्लेख किया गया है -**केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह।।**[9] परन्तु निरुक्त के अनुसार यहाँ केशी का अर्थ रश्मि **केशी केशा रश्मय:** किया गया है। जर्मन विद्वान् **आर्बमन्न** के अनुसार उत्तरकालीन वैदिक धर्म में रुद्र की उपासना से सम्बन्धित कुछ तथ्य रुद्र को एक प्राचीन मानवभक्षी असुर का, ब्राह्मणों द्वारा परिष्कृत, रूप सिद्ध करती हैं[10]। रुद्र के वास्तविक स्वरूप को समझने के इन प्रयासों में एक ही दोष है कि वे रुद्र के सम्पूर्ण स्वरूप का सन्तोषजनक ढंग से समाधान नहीं करते हैं।

---

[2] A. Barth, The Religions of India, pp.160-168.

[3]Alfrad Lyall, Natural Religion in India, pp.36-47.

[4] C.V.N. Ayyar, Origin and Early History of Śaivism in South India pp. 01-19.

[5] ऋग्वेद, १ ,११४.२.३३ , ७.४६

[6] ऋग्वेद २०१.३३.

[7] Rudra appears therefore to have originally represented not the storm pure and simple, but rather its baleful side in the destructive agency of lightning. A. A. MACDONELL, Vedic Mythology pp.77.

[8] J. Muir, Original Sanskrit Text, pp. 147.

[9] ऋग्वेद, १०१.३६०७.

[10] यदुवंशी०२ .सं .पृ ,शैव मत ,

यह अन्वेषणीय विषय है कि कतिपय स्थानों पर रुद्र का स्वरूप परस्पर विरोधी प्रतीत होता है जिसके परिणामस्वरूप रुद्र के स्वरूप के किसी एक अङ्ग को अधिक प्रधानता दी गई तथा अन्य की उपेक्षा की गई है। रुद्र भयावह होने के साथसाथ सौम्य भी हैं। कभी - वे उग्र रूप धारण करके मनुष्यों तथा पशुओं का संहार करते हैंपरन्तु कभी वे कल्याणकारी हो जाते हैं और उनकी शक्ति , जीवनदायिनी बन जाती है, जिससे लोग सन्तान और समृद्धि के लिए रुद्र से प्रार्थना करते हैं। रुद्र की गणना मध्यम लोक अर्थात् आकाश के देवताओं में की गई है[11]। अतः यथासम्भव वे आकाश के ही किसी तत्त्व का प्रतीक रहे होंगे। धनुष रुद्र का विशेष अस्त्र है जिसके शरसन्धान से- वह मनुष्य और पशु दोनों का संहार करता है। यह अस्त्र कड़कती हुई आकाशीय विद्युत का ज्वलन्त प्रतीक है। रुद्र के स्वरूप के साङ्गोपाङ्ग समुचित अध्ययन सेऔर ऋग्वेदीय सूक्तों में रुद्र की उन विशेष , उपाधियों के विश्लेषण से ऐसा जान पड़ता है कि रुद्र घने बादलों में चमकती हुई विद्युत और उसके साथसाथ होनेवाला घनघोर गर्जन और वर्षारूपी - प्राकृतिक तत्त्व का प्रतीक हैं।

रुद्र की उपाधियाँ -

क. **कपर्दिन्**ऋग्वेद में रुद्र को कपर्दिन् कहा गया है -[12] जिसका तात्पर्य है ,जटाजूटधारी। आकाश में उमडी हुई धूसर वर्ण की मेघमाला वास्तव में जटाओं के सदृश प्रतीत होती है तथा बिजली चमकने पर यह कपर्दिन उपाधि को सार्थक करती है। इस उपाधि से रुद्र के अतिरिक्त **पूषन्** देवता को भी विभूषित किया गया है।

ख. **दिवो वराह -**रुद्र को प्रथम मण्डल में **दिवो वराह**[13], अर्थात् आकाश का वराह कहा गया है। काले मेघों से निकलती हुई श्वेत विद्युत् की उपमा दिवोवराह से दी जा सकती है।

ग. **कल्मलीकिन्** रुद्र की एक अन्य स्थान पर -**कल्मलीकिन्**-कहा गया है (जलने या दहकनेवाला)
नमस्या कल्मलीकिनं नमोभिर्गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नाम।[14]
इसकी सार्थकता भी विद्युत् अथवा अग्नि में ही पूरी होती है।

घ. **महाभिषक् -**ऋग्वेद के कतिपय सूक्तों में रुद्र को भैषज्य कहा गया है जो सम्पूर्ण औषधियों का स्वामी तथा रोगनिवारक है।
तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।
यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ [15]
अर्थात् हे ऋत्विज्धनुष से युक्त हैं और सम्पूर्ण -जो उत्तम बाण व शोभन ,आप रुद्रदेव की सम्यक् स्तुति कीजिए ! कल्याण के लिए उन्हीं शक्तिशाली दीप्तिमान व -उन रुद्रदेव का यजन करें। महान् आत्म ,ओषधियों द्वारा रूग निवारक हैं प्राणदातारुद्रदेव की यज्ञपूर्वक सेवा करो। रुद्र की स्तुति में उन्हें धन का प्रदाता, दुखों का नाशक और वज्रबाहु कहा गया है। यहाँ रुद्र को एक संहारक और पुनर्स्थापक दोनों के रूप में देखा गया है

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में रुद्र को **वृषभ**[16] अर्थात् वर्षयिता ,(वर्षा कराने वाला)**द्विबर्हा**[17] अर्थात् **द्वयोपृथिव्याम् :स्थानयो : :अन्तरिक्षे परिवृद्ध**[18] इत्यादि उपाधियों से विभूषित किया गया है।

यजुर्वेद में रुद्र का स्वरूप व उपासना-

---

[11] वहीं०३ .सं.पृ ,

[12] ऋग्वेद, १०५.११४.

[13] दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं,...। ऋग्वेद०५.११४.१ ,

[14] ऋग्वेद०८.३३.२ ,

[15] ऋग्वेद ११.४२.५ ,

[16] ऋग्वेद०६.३३.२ ,

[17] ऋग्वेद१०,११४.१ ,

[18] ऋग्वेदसायण भाष्य। ०६.११४.१ ,

यजुर्वेद की कालावधि में रुद्र के स्वरूप में पर्याप्त विकास हुआ। यजुर्वेद में रुद्र के अत्यन्त भयङ्कर रूप का वर्णन प्राप्त होता है। रुद्र के शर अब पहले से भी अधिक विध्वंसक हैं, जिनसे बचने के लिए रुद्र से प्रार्थना की जाती है[19]। रुद्र को अब **किवि**, अर्थात् विध्वंसक तथा **दौर्वात्य** कहा गया है, जिसका अर्थ भाष्यकार **महीधर** ने **उच्छृंखल आचरण** किया है[20]। इसके अतिरिक्त उनको कई प्रशंसासूचक उपाधियाँ भी दी गई, और उनके धनुष और तरकस को **शिव**[21] कहा गया है। यजुर्वेद में भी रुद्र को भिषक् रूप में स्मरण किया गया है। इस भिषक् रूप में उनका सम्बन्ध देवचिकित्सक अश्विनीकुमारों से हुआ, जिनको यजुर्वेद में रुद्र के पथ पर चलने वाला बताया गया है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में वही सर्वाधिक सुख शान्ति देने वाला शिवतम है-

नमशिवाय च शिवतराय च :शङ्कराय च मयस्कराय च नम :शम्भवाय च मयोभवाय च नम :[22]॥

कृष्ण और शुक्ल यजुर्वेद के दो सूक्त में हमें रुद्र का एक नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, जिसका ऋक् या अथर्ववेद में कोई संकेत नहीं मिलता। ये दो सूक्त हैं **त्र्यम्बकहोम** और **शतरुद्रिय**। त्र्यम्बकहोम[23] में रुद्र के पशुपति और भिषक् रूप के अतिरिक्त उनके साथ एक स्त्री देवता -**अम्बिका** का भी उल्लेख प्राप्त होता है, जिसे रुद्र की बहन बताया गया है। रुद्र की **कृत्तिवासा**: उपाधि के साथ उन्हें मुक्ति देने वाला बताया गया है। **अम्बिका** के उल्लेख से ज्ञात होता है कि रुद्र का एक स्त्रीदेवता के साथ सम्बन्ध था-, जिसकी पूजा भी उसी के साथ होती थी। **त्र्यम्बकहोम** यजुर्वेद का एक विशेष यज्ञविधान है। इन सूक्तों से ऐसा ज्ञान मिलता है कि किसी समय रुद्र के साथ एक आर्येतर देवता का आत्मसात् हो गया था। जिसे हिमालय में बसने वाली जातियाँ कृत्तिवासा के रूप में पूजती थीं। **शतरुद्रिय स्तोत्र** त्र्यम्बकहोम का पूरक है। इस स्तोत्र में रुद्र की स्तुति में ६६ मन्त्र हैं, जिनसे रुद्र के यजुर्वेदकालीन स्वरूप का भलीभाँति परिचय मिलता है।[24] यजुर्वेद के अन्य सूक्तों की भाँति इस स्तोत्र में भी रुद्र की विध्वंसक तथा प्रशंसासूचक - उपाधियों के अतिरिक्त रुद्र को पहली बार यहाँ**शिव**, **शिवतर**, **शङ्कर** आदि कहा गया है। उनकी पुरानी उपाधियाँ कपर्दिन् ,) नीलग्रीव**नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च**[25]**(** तथा पशुपति का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त बहुतसी नई उपाधियाँ भी दी गई हैं-, जैसेगिरिशन्त -, गिरित्र, गिरीश, गिरिचर, गिरिशय। ये रुद्र को पर्वतों से सम्बन्धित करती हैं। **क्षेत्रपति** व **वणिक्** उपाधियों से रुद्र का लोकप्रिय स्वरूप स्पष्ट होता है। परन्तु इस स्तोत्र के बीस से बाईस संख्या तक के मन्त्रों में रुद्र को अनेक विचित्र उपाधियाँ भी दी गई हैं यथा **स्तेनानां पतिवंचक ,, तस्कराणां पति, मुष्णतां पति, विकृन्तानां पति** आदि। आगे के मन्त्रों में सभाव्रात्य आदि रुद्र के गणों का वर्णन है ,गण ,, जो रुद्र के उपासक वर्ग थे। इस स्तोत्र से ज्ञात होता है कि रुद्र ने इन जातियों द्वारा पूजित किसी देवता को आत्मसात कर लिया। इस प्रकार उनके उपासकों की संख्या बढ़ जाने से उनका महत्त्व भी बढ़ गया। रुद्र ने इन देवताओं के विशेष स्वरूपों को ग्रहण किया, वहाँ इन जातियों में प्रचलित देवाराधना के कुछ विशिष्ट प्रकार भी रुद्र की अर्चनाविधि के अङ्ग बन गये, जिनको वैदिक आर्य, विशेषकर वैदिक पुरोहित अच्छा नहीं समझते थे। **शिव** यह नाम भी वैदिक रुद्र की प्रशंसा,सूचक उपाधि है- जो सबसे पहले यजुर्वेद में पाई जाती है।

सामवेद में रुद्र का स्वरूप व उपासना-

सामवेद में रुद्र को ब्रह्मा का उत्पत्तिकर्ता बताया गया है। रुद्र यज्ञ के प्रतिपालकप्रकाश व व्यापक स्वरूप वाले हैं। मृत्यु से :स्वत , रक्षा हेतु रुद्र की अर्चना पर बल दिया गया है।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्यो। अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्॥:[26]

अथर्ववेद में रुद्र का स्वरूप व उपासना-

---

19 यजुर्वेद तैत्तिरीय१.१.१ ,

20 यजु ,वाजसनेयी .१०२०.

21 यजुर्वेद तैत्तिरीय, ४१.५.

22 यजुर्वेद, १६४१.

23 यजुर्वेद तैत्तिरीय, १.३ वाजसनेयी ,६.८.५७६३.

24 यजुर्वेद तैत्तिरीय, ४१.५.

25 यजुर्वेद संहिता १६२८.

26 सामवेद७.७.१ ,कौथुमीय संहिता ,

अथर्ववेद में रुद्र की उपासना **प्राकृतिक तत्त्व** से आगे पुरुषविध रूप में होने लगी थी। रुद्र के साथ उनके अनुचर गणों की चर्चा होती है, सम्भवतः यही ऋग्वेद कालीन मरुत हैं जो आगे चलकर दश रुद्र कहलाये।[27]

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।

य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये॥[28]

अथर्ववेद में रुद्र को अत्यन्त क्रूर व व्याधियाँ फैलाने वाला कहा गया है[29]। एक लोकप्रिय देवता के रूप में, अपनी प्रत्यक्ष शक्ति व प्रकोप के कारण, सम्भवतः रुद्र का उत्कर्ष हुआ, और अथर्ववेद में उनको महादेव की उपाधि दी गई। एक मन्त्र में रुद्र को **भीमं राजानम्** और (आतंककारी नृपति)**उपहन्तु** ;कहा गया है (विध्वंसक) क्योंकि आकाशीय विद्युत के भय से पशुओं को रुद्र के संरक्षण में रखकर उन्हें प्रसन्न किया गया है। इस प्रसंग में रुद्र को प्रथम बार **पशुपति** कहा गया है, और उससे पशुवृद्धि तक के लिए प्रार्थना की गई है[30]।

अथर्ववेद में रुद्र की **नील शिखण्डिन्**[31] ,(नीलवर्ण या गहरे रंग के केशवाला)**सहस्राक्ष**[32]आदि (प्राणिमात्र का निरीक्षणकर्ता) में ही कहाउपाधियाँ प्राप्त होती हैं। अथर्ववेद के पन्द्रहवें मण्डल में रुद्र का व्रात्य के साथ भी उल्लेख किया गया है। सूक्त के प्रारम्भ गया है कि व्रात्य महादेव बन गया, व्रात्य ईशान बन गया अतयह दोनों ही रुद्र की उपाधियाँ हैं :[33]। अथर्ववेद में दो स्वतन्त्र देवताओं **भव** और **शर्व** का उल्लेख हुआ है। परन्तु अथर्ववेद के कुछ मन्त्रों में इनका तादात्म्य रुद्र के साथ स्पष्ट किया गया है[34]।

ब्राह्मण ग्रन्थों में शिव का स्वरूप व उपासना -

ब्राह्मणग्रन्थों में रुद्र को और अधिक विध्वंसक बताया गया है। देवता तक उनसे डरते हैं।-[35] शतपथ ब्राह्मण में रुद्र को पशुपति कहा गया है और पशुओं को उनके नियन्त्रण और संरक्षण में रखा गया है।[36] इसके विपरीत कतिपय स्थलों पर ब्राह्मणकर्त्ताओं ने -ग्रन्थ- रुद्र की भीषणता के लिये यह तक कह डाला है कि रुद्र की उत्पत्ति सब देवताओं के उग्र अंशों के मेल से हुई है।[37]

ऐतरेय ब्राह्मण में उत्तर अथवा उत्तरपूर्व दिशा को रुद्र का विशेष आवास कहा गया है।-[38] अन्यत्र उत्तर दिशा से आने वाले कृष्णवस्त्रधारी एक विचित्र पुरुष की सञ्ज्ञा दी गई है।

रुद्र के स्वरूप और उनकी उपासना में आर्येतर अंशों के सम्मिश्रण से उनमें और अन्य देवताओं के मध्य के अन्तर के भी सङ्केत ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।-**गवेधुकहोम** में वर्णित हैजब अन्य देवतागण स्वर -ग जाने लगे, उस समय रुद्र को पीछे छोड़ दिया गया अतएव उनका नाम **वास्तव्य** पड़ाअर्थात् जो घर पर ही रहे-[39]।

रुद्र का प्रजापति के साथ मित्रवत् सम्बन्ध बताया गया है। देवताओं द्वारा पशु वितरण प्रक्रिया में प्रथमतया रुद्र की उपेक्षा की गई अनन्तर रुद्र द्वारा सृष्टि विनाश के भय से मूषक समर्पित किया गया।[40] त्र्यम्बकहोम में वर्णित रुद्र के विशेष वाहन मूषक का ब्राह्मण- ग्रन्थों में समाधान किया गया है।

---

27 अथर्ववेद३१.०२.११ ,

28 अथर्ववेद०१.१२.७ ,

29 अथर्ववेद ,६१.९०.६,०१.५७.

30 अथर्ववेद, २१.३४.

31 अथर्ववेद २७.२.११,१.३.६;६,२७,

32 अथर्ववेद७.२.११ ,

33 अथर्ववेद५-४.१.१५ ,

34 अथर्ववेद४.६.१२ ,

35 शतपथ ब्राह्मण५-१.१.१.९ ,

36 शतपथ ब्राह्मण७.२.३.६ ,

37 ऐतरेय ब्राह्मण, ३.३ तवलकार ब्राह्मण ,९.८.२६१

38ऐतरेय ब्राह्मण, ५९.२.

39 शतपथ ब्राह्मण, १८-१.३.७.

ब्राह्मणग्रन्थों के समय रुद्र विशुद्ध रूप से-ग्रन्थों के समय तक रुद्र को अन्य देवताओं से पृथक समझा जाने लगा था। ब्राह्मण-कर्मकाण्ड के देवता बन गये थे, जिनका अपना वास्तविक व्यक्तित्व था तथा रुद्र की उपासना उन्नत और प्रगतिशील आर्यजाति में होने लगी थी। कौशीतकी ब्राह्मण में रुद्र को **देवाधिपति** कहा गया है।[41] इस प्रसंग में ऐतरेय ब्राह्मण में प्रजापति का सरस्वती के प्रति अगम्य गमन नामक एक सन्दर्भ प्राप्त होता है। प्रजापति के अपराध से देवता क्रुद्ध हो जाते हैं, और अन्त में उनको दण्ड देने के लिए रुद्र को नियुक्त करते हैं। इस कथा में अन्य देवताओं की अपेक्षा रुद्र का नैतिक उत्कर्ष स्पष्ट दिखाई देता है। यज्ञकर्म के प्रबल नियमों के अधीन होने से अन्य सभी देवता प्रजापति के स्तर पर ही हैं। वे स्वयं प्रजापति को दण्ड देने में असमर्थ हैं। परन्तु रुद्र पर ऐसा कोई बन्धन नहीं है, अतवह प्रजापति के दण्ड का विधान करते हैं। यह बात जैमिनीय ब्राह्मण में स्पष्ट उल्लिखित है। :[42] **नामानेदिष्ठ** की कथा में रुद्र के प्रभुत्व का वर्णन करते हुये समस्त वस्तुओं पर रुद्र का ही अधिकार बताया गया है।[43] अब रुद्र की उपासना सामान्य देवमण्डल के अन्तर्गत होने लगी थी। रुद्र और अग्नि के पुराने तादात्म्य पर बल दिया गया।

ब्राह्मण ग्रन्थों में रुद्र का नियमपूर्वक-**अग्निस्विष्टिकृत** से तादात्म्य किया गया है। इसके अतिरिक्त रुद्र के जन्म के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ रचीं, जिनमें रुद्र का जन्म अग्नि, वायु, आदित्य और चन्द्रमस् के बीज से बताया गया, जो स्वयं प्रजापति द्वारा उत्पन्न किये गये थे।[44] शतपथ ब्राह्मण में रुद्र को संवत्सर और ऊषा से उत्पन्न बताया गया है।[45] प्रजापति द्वारा दी गईं उपाधियाँ अब रुद्र के नाम में परिवर्तित हो गईं। इनमें एक नाम **अशनि** कौशीतकी ब्राह्मण में वर्णित है। यह रुद्र के प्राचीन विद्युत्स्वरूप की ओर सङ्केत - करता है। विविध प्रसङ्गों में रुद्र को**सहस्राक्ष** और **सहस्रपात्** भी कहा गया है। ऋग्वेद में ये विशेषण पुरुष के लिए प्रयुक्त किये गये हैं। इससे रुद्र का उत्कर्ष स्पष्टत प्रामाणित हो जाता है। :

उपनिषदों में शिव का स्वरूप व उपासना-

भगवान शिव के विविध स्वरूपों व आकारों के जितने उपासक हैं उतने किसी अन्य देवता के दुर्लभ हैं। सुदूर वैदिक काल से लेकर व्रात्य आदि आदिम जातियों में पुष्पित पल्लवित होकर उपनिषद् काल तक इसकी उपासना में कई परिवर्तन हुए। उपनिषदों में शिव के सत्स्थिति एवं प्रलय का ,उपनिषद् के अनुसार उत्पत्ति -आनन्दस्वरूप का विशद विवेचन प्राप्त होता है। श्वेताश्वतर-चित्- यअद्वितीकारण रुद्र ही है-

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभि।:

प्रत्यङ्जनाँस्तिष्ठति सञ्चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपा।।:[46]

उपनिषदों के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि का आरम्भ रुद्र से हुआ है। सब प्राणियों में सर्वप्रथम नित्यज्ञानस् ,शुद्ध ,वरूपसर्वज्ञ रुद्र ने , ब्रह्माजी को प्रकट किया।[47] कैवल्योपनिषद् में शैवदर्शन को प्रकाशित करते हुये **अवस्थात्रय**के रूप में (भोगपदार्थ ,भोग्य ,भोक्ता) -शिव का वर्णन किया गया है

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्मयोनिम्।

तमादिमध्यान्तविहीनमेकं विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम्।।[48]

नारायणोपनिषद् में शिव को **त्र्यम्बक** तथा मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला कहा गया है। इसको सिद्ध करने वाला अत्यन्त प्रसिद्ध मन्त्र है -

---

40 तैत्तिरीय ब्राह्मण, १.७ ताण्ड्य ब्राह्मण ,१०.६.९१६.

41 कौशीतकी ब्राह्मण, २३३.

42 जैमिनीय ब्राह्मण, ३६३.२६१.

43 ऐतरेय ब्राह्मण, ५९.२२.

44 कौशीतकी ब्राह्मण, ६१.

45 शतपथ ब्राह्मण, ६३.१.

46 श्वेताश्वतर उपनिषद्०२.०३ ,

47 श्वेताश्वतर उपनिषद्०.०३ ,४

48 कैवल्योपनिषद्६.१,

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

निष्कर्ष-

निष्कर्षतजिसका उल्लेख ,भगवान रुद्र का शिव स्वरूप अभेददृष्टि से सभी प्राणियों पर अपनी समान कृपा रखने वाला नियन्ता है : न रवेदों में प्राप्त होता है। यद्यपि ऋग्वेद में शिव की उपासना आधुनिक रूप में नहीं थी अथापि रुद्र के रूप में उनका महत्वपूर्ण स्थाहा है। यजुर्वेदआदि वेद के अनेक स्थलों में शिव की अगाध महिमा का वर्णन किया गया है। ११ काण्ड-और अथर्ववेद १६ अध्याय-भोजन पकाने में हितकारी अग्निदेव के प्रति -आदिकाल से पृथ्वी पर आदर तथा भय का भाव समान रूप से चला आ रहा है यथा आदरभाव तथा उसी अग्नि द्वारा गहन वन का भस्मीभूत होना उन्हीं अग्निदेव के प्रति भय उत्पन्न करता है। मनुष्य इन्हीं भावों से अपने आराध्य की सेवार्चना करता है। अतएव संहारकारी परन्तु साथ ही कल्याणकारी शक्ति ही जिसे वेदों में कहीं ,है "शिव" (महाभिषक्) व अन्यत्र औषधियों का स्वामी (रुद्र) विध्वंसककहा गया। ब्राह्मण काल से लेकर उपनिषद् काल तक शिव के अनेक नाम प्रसिद्ध हुये। ये नाम पूर्व में उपाधिमात्र थे कालान्तर में यही शिव के स्वरूप तथा उपासना के आधार बन गये। ,

सन्दर्भग्रन्थ सूची-

* Pandey, K.C., An Outline of History of Śaiva Philosophy, MLBD, Delhi, 1986.
* Barth, A., The Religions of India, Boston: Houghton Mifflin & Co., 1882.
* L yall, Alfrad, Natural Religion in India, Cambridge, 1891.
* Monier, Williams, Religious Thought and Life in India, JOHN MURRAY, ALBEMARLE STREET, 1883.
* Ayyar, C.V.N., Origin and Early History of Śaivism in South India, University of Madras, 1974.
* MACDONELL, A. A., Vedic Mythology, STRASSBURG VERLAG VON KARL J. TRUBNER, 1897.
* Muir, J., Original Sanskrit Text, London, 1874.
* यदुवंशी ,शैव मत ,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ,द्वितीय संस्करण ,१९८८।
* Ṛgved-Samhita, Samartha Bharat Press, Vaidic Samshodhan Mandal, Maharashtra.